कृष्ण मंत्र

ओंकार की छवी है सबसे न्यारी । मथुरा में हुए बाल गोपाल अवतारी ॥

देवकी के कोख से प्रकटे आँठवा मोहन धारी। काली रात वसुदेव ने यमुना की बाढ़ को तारी ॥

गोकुल वासा नंद यशोदा का प्यारा । गोपगोपियों को भावे नटखट अमित दुलारा ॥

कंस को मारे कालिया मर्दन से भगावे । भ्राता बलराम के संग लिला रचावे ||

कुरूश्रेत्र में गीता अमृत ज्ञान पिलावे । कुन्तेय सारथी होके यश का भान दिलावे ||

आँठ दिशा से आँठ पत्नियों के संग सिद्धि का रस देवे। महाभयंकर कली में भगत की नैय्या तरावे ||

कृष्ण रुक्मिणी के संग अनिमा सिद्धि दिलावे । पुरब में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण जामवंती के संग गरिमा सिद्धि दिलावे। अगन में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण सत्यभामा के संग लघिमा दिलावे । दख्खन में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण कालिंदी के संग महिमा दिलावे । नैऋत्य में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण सत्या के संग प्राप्या सिद्धि दिलावे। पश्चिम नग्नजीत में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण मित्र वृंदा के संग पराकम्या सिद्धि दिलावे। वायुकोण में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण रोहिणी के संग ईशत्व सिद्धि दिलावे। उत्तर में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

कृष्ण लक्ष्मणा के संग वशत्व सिद्धि दिलावे। ईशान में रहकर ज्ञान अमिरस का पिलावे ॥

गोपालों के संग रहे गोवर्धन धारा। इंद्र के क्रोध को देवे फटकारा ॥

कृष्ण राधा संग काया रूपी वन में संचारे । मायारूपी सागर कंद वासिनी नाव से तारे ॥

भांडीर वट के नीचे मनोहर बासरी बजावे। सुना के भगत को परमानंद दिलावे ॥

सत्य का दिया जलाके ज्ञान का भंडार खुलावे। अज्ञान को बुझा के हरी नाम को झुलावे ॥

पांडुरंग बनके संतन की आस पुरावे । मोक्ष का द्वार खोलकर भक्ती रस को चुसावे ॥

सोलह हजार पंखुड़ियों के कमल में बिराजे | मुरलीधर बनके ज्ञानी का शिरोमणी साजे ॥

प्यार भरी रास क्रीडा राधा संग खेले । सारे विश्व में आनंद ही आनंद डोले ॥

झूठा कौरवी अज्ञान का कुआ बुझावे । सत्य से पांडवी ज्ञान का दिया जलावे ॥

अठारह दिन में सत्य का डंका बजावे | परम आनंद रूपी स्वर्गद्वार को खुलावे ॥

मै भगत लेके हरी भक्ती की आस । न छोडे सदा राखे तेरे ही पास ॥

जय गोपाल जय कन्हैया जय जय देवकीनंदन जय मुरारी जय गोराखी जय जय वसुदेव नंदना । जय गोकुल वासी जय गोवर्धनधारी जय जय यशोदा का लाला ||

जय बाके बिहारी जय गो संवर्धन कारी जय जय नंद का प्यारा | जय पांडव सखा जय गिरधारी जय जय ज्ञान का भंडारा ॥

जय राधा सखा जय मुरली धाता जय जय रुक्मिणी का प्यारा । जय अर्जुन सखा जय जगन्नाथा जय गोकुल का प्यारा ॥

अनंत कोटी ब्रह्मांड में तेरा ही सहारा ज्ञान की दीक्षा देके सत्य का करे फवारा ॥

ॐ स्वामी। ॐ स्वामी। ॐ स्वामी ॥ हरी ॐ तत्सत् ॥